Dated 10/9/2020

Date / /
Page

B.A Part-2 (H) Philosophy

अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

लॉक के अनुसार जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन की व्याख्या करें।

Ans:→ लॉक जन्मजात प्रत्ययों के खंडन के लिए निम्नलिखित तर्क देते हैं:—

1. बुद्धिवादी दार्शनिक सार्वभौम तथा अनिवार्य ज्ञान को जन्मजात मानते हैं। लॉक के अनुसार ऐसा कोई भी दार्शनिक या व्यावहारिक सिद्धांत नहीं जिसे सारे विश्व के लोग स्वीकार करते हों। यदि सारा विश्व किसी एक विचार से सहमत हो तो उसे सार्वभौम माना जा सकता है, परन्तु सार्वभौम होने से वह विचार जन्म-जात नहीं। मनुष्य किसी दूसरे कारणवश भी एकमत हो सकता है।

2. कुछ लोग कहते हैं कि जन्मजात प्रत्यय हममें जन्म से विद्यमान रहते हैं, परन्तु हमें सर्वदा उनकी प्रतीति नहीं होती क्योंकि वे प्रत्यय अचेतन मस्तिष्क में रहते हैं। लॉक का कहना है कि वस्तु का होना एवं उसकी प्रतीति का न होना असंभव है। तात्पर्य यह है कि यदि जन्मजात प्रत्यय रहते हैं उनकी प्रतीति अवश्य होती। होने का अर्थ ही प्रतीयमान होना है। अतः अप्रतीयमान अस्तित्व तो विरोध सूचक है।

③ यदि कोई सार्वभौम अनिवार्य ज्ञान है तो उसकी सत्ता सबमें होनी चाहिए। पागल, मूर्ख आदि सबमें वह ज्ञान विद्यमान होना चाहिए। पागल, मूर्ख बालक को किसी भी सार्वभौम नियम का पता नहीं। यदि कोई कहे कि सार्वभौम ज्ञान उनमें भी है, पर चेतनरूप से नहीं तो यह कहना व्यर्थ है; क्योंकि ज्ञान का अर्थ ही चेतना है। अचेतन ज्ञान की सत्ता नहीं स्वीकार की जा सकती है। कोई भी बच्चा जन्म से यह नहीं जानता कि 3+4=7 वरन वह एक से सात तक गिनती सीख कर ही जानता है कि तीन और चार का योग सात होगा कुछ मूर्ख गिनती भी नहीं जानते। (4) बुद्धिवादी दार्शनिकों का कहना है कि तादात्म्य का नियम (Law of Identity) तथा विरोध का नियम (Law of contradiction) आदि मौलिक जन्मजात प्रत्यय हैं। लॉक का कहना है कि किसी व्यक्ति को इन नियमों का पता बिना सीखे नहीं चल सकता। यदि ये नियम जन्मजात होते तो बच्चे, मूर्ख, जंगली असभ्य आदि सभी इसे जानते। (5) कुछ लोगों का कहना है कि नैतिक नियम (Moral principles) जन्मजात हैं, क्योंकि नैतिक नियम सभी देश तथा समाज में समान हैं। हित या भलाई की धारणा भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न है। अतः न्याय आदि नैतिक सिद्धांत भी अलग-अलग हैं।

—X—